देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

Impact Factor
8.642

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

53.	मिट्टी से बना अन्न	डॉ. टी. अरूणा कुमारी	285–289
54.	हसीनाबाद उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. अर्चना शर्मा	290–293
55.	भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने में कानूनी अधिकारों की भूमिका	विवेचना पाण्डेय, डॉ. सरिता भवानी मालवीय	294–300
56.	**Therigatha : Legacy and Relevance in 21st Century Indian Literature**	**Indresh Prasad Purohit**	**301-310**
57.	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताओं में यथार्थ विमर्श	डॉ. लता एस. पाटिल	311-315
58.	**Entrepreneurial Self-Efficacy and Entrepreneurial Intentions of Tribal Women: A case Study of Chhattisgarh, India.**	**Dimpal Agrawal**	**316-328**
59.	**The Anatomy of Indifference : Literature as an Antidote to Modern Insensitivity**	**Dr. S. Farhana Zabeen, Dr. I. Jane Austen**	**329-334**
60.	**Quest for Self-Identity and Independence of Women in Preeti Shenoy's The Secret Wishlist**	**Dr. R. Abeetha, Dr.A. Jayashree Prabhakar**	**335-345**
61.	**Feminine Isolation and Resistance through Nature in Anita Desai's *Fire on the Mountain***	**Ms.Greeshma N.P, Dr. I. Jane Austen**	**346-351**
62.	बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता के अनुप्रयोग की संभावनाएं और चुनौतियां	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्री एच पंढरीनाथ	352–355
63.	मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन	वी. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलापाटि	356–360
64.	डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा–साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	361–365
65.	मंजरी : किन्नर विमर्श	डी श्रीदेवी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	366–369
66.	सामाजिक माध्यम और इंटरनेट पर रचनात्मकता : नए माध्यम एवं नई भाषा (बाल साहित्य के संदर्भ में)	गुरू गोविंद विश्वत, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	370–375
67.	वृद्धों के प्रति संवेदनहीन होती मनुष्यता	बी. कमला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	376–381
68.	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कथा साहित्य में बदलता हुआ सामाजिक यथार्थ	डॉ. अनुराधा पी.	382–386
69.	कृष्नचंदर कृत 'जामुन का पेड़' कहानी में प्रशासनिक विमर्श	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	387–392

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 356-360

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन

वी. अमुधा, सहायक प्राध्यापक,
डॉ. अनुराधा पाकलापाटि, सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग, वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज (विस्टास) पल्लावरम, चेन्नई।

सारांश :

इस प्रपत्र में मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के साक्षात्कार के आधार पर उनके सृजनात्मक विचारों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। दोनों सहित्याकारों के जीवन, उनके कृतियाँ, मॉरिशस समाज के प्रति उनके विचार, धर्म और मॉरिशस के बदलते समाज और संस्कृति के प्रति उनकी दृष्टिकोण आदि विषयों पर इस आलेख में व्यक्त किया गया है।

बीज शब्द : मॉरिशस, प्रवासी हिन्दी साहित्य, साक्षात्कार, संस्कृति, लगाव, यातना, त्रासदी।

प्रस्तावना :

मॉरिशस का प्रवासी हिन्दी साहित्य समृद्ध है। कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध और अन्य विधाओं में महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं, जिनमें अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, कृष्ण लाल बिहारी, और ईश्वरचन्द्र गंगाराम जैसे लेखक शामिल हैं। यह साहित्य भारत में प्रकाशित होने वाले हिन्दी साहित्य से जुड़ा हुआ है और मॉरीशस की हिन्दी भाषा और संस्कृति को दर्शाता है, जहाँ आज भी हिन्दी का प्रचार–प्रसार किया जाता है। मॉरिशस की स्वतंत्रता के उपरांत हिंदी भाषा और विकास के लिए संगठित प्रचार ही नहीं हुए, बल्कि अनेक रचनाकारों का भी जन्म हुआ। मॉरिशस की स्वंतत्रता से लेकर आज तक के इतिहास में हिंदी साहित्य नई ऊन्चाइयों को छुआ है, लेकिन उसके अस्तित्व के लिए संकटों तथा चुनौतियों की मात्रा और संख्या भी निरंतर बढ़ती गई है।

साहित्यकारों का जीवन परिचय :

मॉरिशस के प्रख्यात समकालीन साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरंधर का जीवन परिचय नीचे दिया गया है।

अभिमन्यु अनत :

इनका जन्म 9 अगस्त 1937 वर्ष को मॉरिशस के उत्तर प्रान्त के थ्रिओले नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम पतिसिंह व माता का नाम सुभागो देवी था। इनके पिता जी अत्यंत उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति के थे।

साथ ही वे कुशल सामाजिक कार्यकर्ता भी थे। अभिमन्य अनत मॉरिशस के प्रवासी हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखकों में से एक हैं। अभिमन्यु अनत की विशेषता यह है कि वे मॉरिशस द्वीप की पहचान और प्रसिद्धि के समान प्रतीक बन गए, जैसे वहाँ के प्रथम प्रधानमंत्री डॉक्टर शिवसागर रामगुलाम अपने कृतित्व से मॉरिशस को विश्व में प्रख्यात बना दिया।

अनत बहुमुखी रचनाकार हैं। वे उपन्यासकार, कहानीकार, कवि, नाटककार, जीवनीकार, आत्मकथाकार, संस्मरणकार, यात्रा–वृत्तांतकार, लघुकथाकार, व्याख्यानकर्ता, संपादक इत्यादि अनेक रूपों में प्रसिद्द थे। उनके रचनाओं के माध्यम से हिन्दी पाठक मॉरिशस के प्रवासी भारतीयों के संघर्ष की कहानी को निकटता के साथ अनुभव करते हैं तथा भारत–मॉरिशस के संबंधों में और भी स्थायित्व, मधुरता और विश्वसनीयता लाने में सहयोगी बन सकेंगे। डॉ श्रीचित्रा वी. एम. अभिमन्यु अनत के बारे में लिखती है– "अभिमन्यु अनत का उपन्यास साहित्य चिंतन–प्रधान तथा बौद्धिकता को ढोने वाली है। उनके उपन्यासों में बदली हुई सामाजिक रूढियों की जटिलता, लाचारी तथा मुक्ति की कामनाओं का संकेत मिलता है।"[1] अभिमन्यु अनत के साहित्यिक कृतित्व ने केवल मॉरिशस ही नहीं, भारत और हिन्दी को भी सम्मानित किया है। उनकी रचनाओं में भारत से मॉरिशस में आए भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का संपूर्ण विवरण है। हनुमान चालीसा, रामचरितमानस आदि ग्रंथों के सहारे गिरमिटिया मजदूर हिन्दू–धर्म, संस्कृति, अस्मिता तथा हिन्दी–भाषा की रक्षा की। अभिमन्यु के घर में भी हनुमान जी का छोटा–सा मंदिर है और वे प्रत्येक वर्ष दुर्गा–पूजा का आयोजन करते थे।

रामदेव धुरंधर :

मॉरिशस के पूर्वी प्रान्त के कारोलीन नामक साधारण ग्रामांचल में 11 जून 1946 को रामदेव धुरंधर जी का जन्म हुआ। धुरंधर जी के पिता का नाम श्री श्यामलाल धुरंधर था और माता का नाम श्रीमती कौशल्या धुरंधर है। इनके परिवार में चार भाई व एक बहन थी। धुरंधर जी की पढ़ाई अंग्रेजी और फ्रेंच भांषा के साथ–साथ हिन्दी में भी हुई। उस समय सरकारी नौकरी मिलना आसान न था। हिन्दी अध्यापन के लिए भेजे गए आवेदन पत्र के आधार पर 1970 में धुरंधर जी को अध्यापक पद पर नियुक्त कर लिया गया।

धुरंधर जी का सम्पूर्ण साहित्य युगीन परिस्थितियों और परिवेश की उपज है। जीवन की प्रत्येक अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी इन्होंने अपनी लेखनी को विराम नहीं दिया। वे आज भी समाज के विसंगतियों को अपने कृतियों में उजागर कर रहे हैं। धुरंधर जी अपनी प्रतिभा के बल पर अध्यापन के तहत सरकारी नौकरी करने लगे किन्तु धुरंधर जी का हृदय में हमेशा लेखक बनने की चाह थी। उनका प्रारम्भिक जीवन कष्टों, अभावों और संघर्षों का जीता–जागता प्रमाण है। माता–पिता की अशक्तता, पढ़ाई का छूट जाना, घर की जिम्मेदारी तथा फ्रांसीसीयों की प्रताड़ना जैसी दुर्गम कठिनाईयों ने उनके धैर्य व विश्वास को न हिला सके।

मॉरिशस के साथ जुडाव :

अभिमन्यु के दादाजी गिरमिटिया मजदूर के रूप में लाया गया था। जिन परिस्थितियों में भारतीय मजदूरों को जीना पड़ा वह हृदयविदारक हैं। अनत जी मॉरिशस के प्रवासी मजदूरों की जीवन को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे। प्रवासी लोगों पर चाबूकों और बाँसों की बौछार होती थी। सप्ताहभर के काम से प्राप्त कमाई बारह आने और दो डिबिया चावल–दाल मिलते थे। 'रामायण' ग्रंथ पढ़ना और हिन्दी भाषा सीखना मना था। एक बहुत ही लंबी अवधि के बाद गिरिमिटिया भारतीय अपने सिर उठाने में सफल हुए थे। मॉरिशस में उनके

परिवार के साथ वही गुजरा जो हजारों मजदूरों के साथ हुआ। चोरी–चुपके से पढ़ते–पढ़ते अपनी संस्कृति को जीवित रखे आ रहे थे। उन ऐतिहासिक यातनाओं की प्रतिक्रिया स्वरूप अनत जी को लेखक बनाया।

मॉरिशस के कारोलीन गाँव से रामदेव धुरंधर विशेष लगाव है। यहीं पले, बढ़े और इसी गाँव में अपनी सफलता भी देखी और असफलता भी। इस गाँव से उनका इतना जुड़ाव है कि वे विश्व भर के देशों में घूम फिर कर बार–बार यहीं लौट आते थे। इसी गाँव के लोगों से उनका जान पहचान है जहाँ से उनको एक सफल लेखक बनाया। उन्होंने अपने गाँव के साथ लगाव को कुछ ऐसा व्यक्त करते हैं– "मैं अपने जन्म गाव में रह कर उनकी अपेक्षा ठीक ही जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। बस मैं उन्हें भूल नहीं पाता और यह मेरे लिए अनमोल है"[2]

मॉरिशस और भारत के संबंध में साहित्य की भूमिका :

अभिमनयु अनत का मानना है कि भारतीय परंपरा से जुडे मॉरिशस के प्रवासी भारतीयों में हिन्दी साहित्य की भूमिका बहुत बड़ी है। अनत जी का कहना है, "भारतीय सरकार से बस इतनी ही अपेक्षा है कि भारत यह न भूले कि मॉरिशस के साथ उसका रिश्ता मात्र राजनीतिक और व्यापारिक नहीं है, बल्कि 150 वर्ष पुराना सांस्कृतिक संबंध है।"[3] अनत जी का मानना है कि दोनों देशों के कलाकारों, लेखकों, बुद्धिजीवियों और पत्रकारों का आदान–प्रदान करने से ही साहित्य के माध्यम से मॉरिशस और भारत का संबंध मजबूत होगा।

रामदेव धुरंधर से मॉरिशस और भारत के संबंध के बारे में दीपक कुमार पांडे द्वारा लिए गए साक्षात्कार में सवाल किया गया, तो उनका कहना है कि भारत और मॉरिशस का सबंध अब ज्यादातर राजनीतिक हो गया है। पर राजनीति में समाज और संस्कृति को बराबर ध्यान में रखा जाता है। साहित्य से भी यह पहचान बनी है। हिंदी के साहित्यकार भारत में अधिकाधिक हैं और उन्हें सांस्कृतिक दूत के रूप में परखा जाता है। साहित्य के माध्यम से भारत और मॉरिशस को जोड़ने में हिन्दी लेखक के रूप में धुरंधर जी का बहुत बडा भूमिका रहा है।

मॉरिशस में हिन्दी की वर्तमान स्थिति :

अनत जी मॉरिशस के हिन्दी पठन–पाठन को लेकर बहुत चिंतित थे। उनका मानना है कि "हिन्दी के शिक्षण–स्तर के विकास तथा हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक है कि हम इतना जान ले कि अतीत में यह भाषा मात्र हमारी अभिव्यक्ति का संबंध नहीं थी, बल्कि वह हमें अन्दरूनी ढंग से जोडे हुई थी। हमारी अस्मिता को बरकरार रखे हुए थे।"[4] मॉरिशस में प्रकाशन की सुविधा की कमी के कारण सृजनात्मक साहित्य का प्रकाशन निराशजनक है। जिस हिन्दी की प्रचार के लिए आंदोलन हुआ करता था, आज उनके दायित्व की स्थिति विकलांग है। वे हिन्दी भाषा को मॉरिशस के राजकीय स्तर पर मान्यता की अधिकार दिलाना चाहते थे। हिन्दी की प्रचार–प्रसार के लिए वे साप्ताहिक और दैनिक प्रत्रिकाओं की आवशयकता को मानते थे। हिन्दी, जो मॉरिशस के प्रवासी भारतीयों के संघर्ष का भाषा रहा है, उसे उचित स्थान दिलाना चाहते थे।

रामदेव धुरंधर का मानना है कि मॉरिशस में हिन्दी न ही राष्ट्रभाषा है और न ही राजकीय भाषा है। क्रियोल ही मॉरिशस की प्रचलित भाषा है। धुरंधर जी के अनुसार "यहाँ हिन्दी के तीन सूत्र हैं, वे हैं भारतीयता में विश्वास, हिन्दी के प्रति सरकार की नीति और हिन्दी के माध्यम से रोटी का सवाल।"[5] भारतीय वंशज होने के नाते प्रवासी भारतीय लोग हिन्दी से प्रेम करते हैं। हिन्दी की मान्यता देखें तो इसे पढने से रोजीरोटी की संभावनाएँ बहुत ही कम है। मॉरिशस में हिन्दी लेखन में मंदता की स्थिति व्याप्त है।

मॉरिशस की बदलती समाज–संस्कृति :

मॉरिशस में रहने वाले प्रवासी भारतीय के दूसरी पीढी होने के बावजूद वे अपने को हमेशा एक भारतीय ही समझते थे। वे हमेशा कहते थे कि "मॉरिशस मेरी जन्म भूमि है और भारत मेरी सांस्कृतिक भूमि है।"[6] अनत जी को पता है कि गाँधी के आह्वान से प्रवासी भारतीयों ने राजनीति में सक्रिय भागीदारी किया जिससे उनके जीवन में एक नई जागरूकता, नई चेतना और संघर्ष की नई शक्ति उत्पन्न हुई। मॉरिशस में विदेशी शासन समाप्त होने के बाद भी शासन–तंत्र की गतिविधि आसानी से समाप्त नहीं हुई। मॉरिशस के संस्कृति को लेकर उनका विचार है कि "विदेशी शासन के अत्याचारों को झेलकर अपनी संस्कृति की रक्षा कठिन तो होती है लेकिन असंभव नहीं. भारते में भी वैसा हुआ और मॉरिशस में भी, लेकिन अपने लोगों के दोगलेपन के बीच अपनी संस्कृति को बचा पाना असंभाव प्रतीत होता है।"[7]

मॉरिशस के प्रवासी भारतीय की तीसरी पीढी होने पर भी रामदेव धुरंधर हमेशा भारतीय तत्वों से ही जी रहे हैं। मॉरिशस के प्रवासी भारतीयों में द्वयं संस्कृति का प्रचलन चल रहा है। एक पाश्चात्य संस्कृति है और दूसरा भारतीय संस्कृति। वे इस बात से सेहमत हैं कि "एक तरह से दोनों कंधों से कंधा मिला कर ही चल रही हैं, लेकिन छाप प्रबलता से पाश्चात्य की ही है।"[8] उन्हें इस बात की दुख है कि मॉरिशस के प्रवासी भारतीयों में भारतीयता विलुप्त हो रहा है। पर उन्हें दृढ विश्वास है कि भविष्य में भी भारतीय संस्कार मॉरिशस में रहेगा।

महा उपन्यासों का उद्देश्य :–

साक्षात्कार के दौरान अनत द्वारा कृत महा उपन्यास 'लाल पसीना' के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को सांझा करते हैं। 'लाल पसीना' 1850 से 1900 तक होनेवाली कहानी है। इस उपन्यास में पात्रों से संबंधित घटनाओं को बडी ईमानदारी से प्रस्तुत किया है। भारत से आए मजदूरों की त्रासदपूर्ण कहानी को ऐतिहासिक और औपन्यासिकता के साथ दर्शाया है। इस उपन्यास के संबंध में अभिमन्यु का कथन है– "दस साल से अधिक समय तक 'लाल पसीना' को मैं अपने जेहन में जीता रहा। पास–पडोस के सबसे वृद्ध लोगों से मिलकर उनसे बातें करता रहा।"[9] 'लाल पसीना' उपन्यास के तीन भाग हैं– पहले भाग जहाँ मजदूरों को अपनी भारतभूमि छोडकर काम करने पर विवश हुए। 1901 को गाँधी जी का आगमन मॉरिशस में हुआ, उपन्यास की दूसरी कडी गाँधी से प्राप्त मनोबल के आधार पर है। तीसरी भाग में मॉरिशस के आजादी के बाद से राजनीतिक छलावे तक की गाथा है।

रामदेव धुरंधर का 'पथरीला सोना' छः खंडीय उपन्यास है जिसके रचना भूमि काल 1834 से 2000 तक का है। 125 वर्षों की कहानी है यह उपन्यास। भारतीय मजदूर जो मॉरिशस के पत्थर के नीचे सोना लेने के सपने में आए थे, असलियत में वह एक छल है। इस उपन्यास के तीन खंडों में मॉरिशस में भारतीय मजदूरों के आगमन सन 1834 से लेकन सन 1912 तक की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर कहानी को पिरोया है। अगले तीन खंडों में 1912 से 2009 तक की समयावधि की कथा है। पूर्वजों के यातनाओं को रामदेव उनके जुबान से सुनाया करते थे। यह उपन्यास पच्चीस साल की खोज है। इस इतिहास को लिखने का मकसद रामदेव जी ने पूर्वजो की श्रद्धांजलि के रूप में माना जाता है।

निष्कर्षतः मॉरिशस में जन्मे दोनों समकालीन साहित्यकार अंग्रेजी प्रलोबन को त्याग कर जन पथ पर चलने का निर्णय लिया। जीवन पर्यंत मॉरिश्स में ही हिन्दी साहित्य के लिए काम करते रहे। यह दोनों हिन्दी

लेखकों का नाम, विश्व के विशाल साहित्य परिवार में एक अग्रगन्य स्थान प्राप्त किए हैं। जिनकी शाखाएँ विश्व भर में फैली हुई है। इन साहित्यकारों के रचनाओं के कारण भारत और मॉरिशस के बीच का संबंध और मजबूत हुआ है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ श्रीचित्रा वी एम, उपन्यासकार अभिमन्यु अनत, पृ. 150
2. दीपक कुमार पाण्डेय, मारेशस लेखक : रामदेव धुरंधर्न साक्षात्कार के आईने में, स्वराज प्रकाशन, पृ. 24
3. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत की साहित्य–यात्रा, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 9
4. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत की साहित्य–यात्रा, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 80
5. दीपक कुमार पाण्डेय, मारेशस लेखक : रामदेव धुरंधर्न साक्षात्कार के आईने में, स्वराज प्रकाशन, पृ. 128
6. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत की साहित्य–यात्रा, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 77
7. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत की साहित्य–यात्रा, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 21
8. दीपक कुमार पाण्डेय, मारेशस लेखक : रामदेव धुरंधर्न साक्षात्कार के आईने में, स्वराज प्रकाशन, पृ. 98
9. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत की साहित्य–यात्रा, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 197

E mail: amudhav.hindi@vistas.ac.in

Mobile : 9840824531

Mobile: 7299012063